सीए एमपीसी मई 2024

1. एक नया मन - क्या आपके पास ईश्वरीय बुलाहट (मिशन) के लिए मन है? अन्य लोगों को मसीह के लिए अपना जीवन देते हुए देखने की इच्छा है ? यदि नहीं, तो प्रार्थना करें कि परमेश्वर आपको एक नया मन दे। (यहेजकेल 36:26)

2. ध्यान केन्द्रित करना - एक मसीही के रूप में सफल होने की कुंजी अपना सारा ध्यान पूरी तरह से यीशु पर लगाये रखना है । और याद रखें: उसने वादा किया है कि वह आपसे कभी अपना ध्यान नहीं हटाएगा। परमेश्वर को धन्यवाद दें कि उसने वादा किया है कि वह आपको न तो धोखा देगा और न ही आपको कभी त्यागेगा। (1 इतिहास 28:20)

3. जिसके योग्य नहीं हैं - त्रिएक परमेश्वर ने आपके लिए, और सभी मनुष्यों के लिए अद्भुत कार्य किए हैं, भले ही हममें से कोई भी उनके योग्य नहीं था। आज उसकी स्तुति करो और तुम्हें बचाने के लिए उसे धन्यवाद दो! (भजन संहिता 105:1,2)

4. हमेशा तैयार रहना - परमेश्वर चाहता है कि आप उसके जैसे बनें, और वह चाहता है कि आप हर अच्छे काम के लिए पूरी तरह से तैयार हों। प्रार्थना करें कि पवित्र आत्मा आपको भीतर से बदल कर वैसा मनुष्य बना दे जैसा परमेश्वर ने आपको बनाना चाहा है। (2 तीमुथियुस 3:16,17)

5.लड़ाई—झगड़े – "तुम में लड़ाइयां और झगड़े कहां से आ गए? क्या उन सुख- विलासों से नहीं जो तुम्हारे अंगों में लड़ते- भिड़ते हैं?" (याकूब 4:1) जब तक हमारे दिल और दिमाग मसीह के प्रभुता के प्रति समर्पित नहीं होते हैं, तब तक हम पर अपनी शारीरिक सुख- विलासों का हावी होने का खतरा बना रहता है। मसीह को अपनी आत्मा का प्रमुख बनने दें।

6. लड़ाई (युद्ध) - "फिर स्वर्ग में लड़ाई हुई, मीकाईल और उसके स्वर्गदूत अजगर से लड़ने को निकले, और अजगर ओर उनके दूत उस से लड़े। परन्तु प्रबल न हुए, और स्वर्ग में उन के लिये फिर जगह न रही।"(प्रकाशितवाक्य 12:7)। शैतान बुराई का स्रोत है और परमेश्वर के शासन का भारी विरोध करता है। जल्द ही परमेश्वर एक नया स्वर्ग और पृथ्वी बनाएंगे। उसके स्वामित्व के प्रति समर्पण कर दो और तुम उसके साथ सदैव राज्य करोगे।

7. अंत समय - ""तुम लड़ाइयों और लड़ाइयों की चर्चा सुनोगे; देखो घबरा न जाना क्योंकि इन का होना अवश्य है, परन्तु उस समय अन्त न होगा।"(मत्ती 24:6)। आज हमारी दुनिया में 110 से अधिक सशस्त्र संघर्ष हैं। यीशु ने इसका और अन्य तथ्यों का वर्णन मत्ती 24 में किया है। ये "प्रसव पीड़ा की शुरुआत" हैं लेकिन अभी अंत नहीं हैं। हे मनुष्यों, बचाए जाने के लिए विश्वास में दृढ़ रहो।

8. ऊंघना - "जब दुल्हे के आने में देर हुई, तो वे सब ऊंघने लगीं, और सो गई।" (मत्ती 25:5)। धैर्य रखना अधिकांश मनुष्यों की कमजोरी है । हम सभी कुछ न कुछ करना पसंद करते हैं, लेकिन मसीह की वापसी हमारी समय सारिणी में नहीं है। फिर भी, उनके आने तक काम करने का उनका आदेश कायम है। प्रार्थना करें कि हम ऊंघे नहीं और सुस्त न हों, पर और उसकी ईश्वरीय बुलाहट में शामिल हों।

9. विवेकहीन नफरत - " चोर किसी और काम के लिये नहीं परन्तु केवल चोरी करने और घात करने और नष्ट करने को आता है। " (यूहन्ना 10:10)। सर्व-नाश के बाद से, दुनिया ने नफरत को राक्षसी, विवेकहीन और शैतानी के रूप में नहीं देखा है, जैसा कि मध्य पूर्व में घातक, यहूदी विरोधी भावना पर हमले के रूप में देखा गया है। यहूदियों के प्रति घृणा उतनी ही पुरानी है जितनी शैतान की परमेश्वर के प्रति घृणा और ईर्ष्या। निर्दोष पीड़ितों के लिए प्रार्थना करें।

10. अद्भुत प्रेम - "परन्तु परमेश्वर हमारे प्रति अपना प्रेम इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे, तभी मसीह हमारे लिये मरा" (रोमियों 5:8)। अपने अद्भुत प्रेम में, परमेश्वर ने गिरी हुई मानवता को शैतान के पंजे से बचाया है। अपने मित्रों और परिवार के साथ सुसमाचार साझा करें। किसी को भी परमेश्वर के उद्धार से बाहर नहीं रखा गया है।

11. जिन तक पहुंचा नहीं गया - "इसलिए जाओ और सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ..." (मत्ती 28:19)। 6,000 से अधिक वंचित लोगों के समूह हैं, लगभग 3 अरब लोग, जिन्होंने सुसमाचार नहीं सुना है। चर्च, जो मसीह की दुल्हन है, के लिये प्रार्थना करें कि वह अपनी नींद से जागे और आप मसीह की महान आज्ञा का पालन करने के लिए तैयार रहें।

12. क्लेश – "संसार में तुम्हें क्लेश होता है, परन्तु ढाढ़स बाँधो, मैं ने संसार को जीत लिया है।"" (यूहन्ना 16:33)। आपकी परेशानी में आप अकेले नहीं हैं! जीवित रहने का अर्थ है बुरे दिनों का सामना करना। छिपाने की कोशिश मत करो; प्रभु के वचन को मानें और उस पर भरोसा रखें कि वह आपको इस तरह से तैयार करेगा कि आप उसकी बुद्धि और शक्ति से अपनी समस्याओं का सामना करने में सक्षम हों।

13. संकट - "अपने संकट में मैं ने यहोवा परमेश्वर को पुकारा; मैं ने अपने परमेश्वर को दोहाई दी।" (भजन संहिता 18:6)। कभी-कभी परमेश्वर हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर नहीं देता क्योंकि वह जो कहना चाहता है हम उसके लिए तैयार नहीं होते। इसलिए, उस पर भरोसा करना कभी न छोड़ें। वह आपकी बात सुनता है. विश्वास के सभी महापुरुषों ने टूटेपन और संकट के माध्यम से परमेश्वर की अद्भुत महानता की खोज की।

14. पीड़ा - " मैं अपना मुंह बन्द न रखूंगा; अपने मन का खेद खोलकर कहूंगा " (अय्यूब 7:11)। बहुत कम लोग अय्यूब की तरह पीड़ा की तीव्रता का अनुभव करते हैं। लेकिन परमेश्वर ने इसे एक उद्देश्य के लिए अनुमति दी। उसे अय्यूब की सत्यनिष्ठा पर भरोसा था और उसने जो कुछ सहा उसके कारण वह उसके विश्वास की निन्दा नहीं करेगा। प्रार्थना करें कि आप भी एक ऐसा व्यक्ति बनें जो प्रभु पर भरोसा रखता हो, चाहे कुछ भी हो।

15. क्रोध – "कांपते रहो और पाप मत करो; अपने अपने बिछौने पर मन ही मन सोचो और चुपचाप रहो।" (भजन संहिता 4:4)। आपने इसे पहले सुना है: "बोलने से पहले सोचें। बिना सोचे-समझे कार्य न करें।" परन्तु परमेश्वर की सलाह आत्मसंयम से बढ़कर है। वह हमारे छिपे हुए उद्देश्यों को उजागर करना चाहता है। उसे अपनी विपत्ति (अंधकार) में चुपचाप बोलने की अनुमति दें।

16. चिंता - "और अपनी सारी चिन्ता उसी पर डाल दो, क्योंकि उस को तुम्हारा ध्यान है। " (1 पतरस 5:7)। यदि आप बहुत अधिक चिंता करने वाले हैं, तो आप जानते हैं कि अपनी चिंता से छुटकारा पाना कितना कठिन है। बाइबल हमें आदेश देती है कि हम इसे छोड़ दें, अपनी चिंता प्रभु पर डाल दें। यह आपके विश्वास और इच्छा का प्रयास है। विश्वास रखें कि प्रभु हमेशा अपना वादा पूरा करते हैं। उस पर विश्वास करो!

17. आगे बढ़ना – "क्योंकि तेरी सहायता से मैं सेना पर धावा करता हूं; और अपने परमेश्वर की सहायता से शहरपनाह को लांघ जाता हूं।" (भजन संहिता 18:29)। राजा दाऊद को वर्षों से उसके दुश्मनों द्वारा सताया और परेशान किया गया था और वह जानता था कि वह किस बारे में बात कर रहा था। प्रार्थना करें कि आप भी एक ऐसा व्यक्ति बनें जो परमेश्वर के लिए जीता है। वह आज आपको अपने परिवार और अपनी दुनिया में एक अगुवे के रूप में उपयोग करना चाहता है।

18. ढूँढ़ना - अद्भुत! हम प्रभु को ढूँढ़ना चुन सकते हैं और उन्होंने स्वयं वादा किया है कि वह मिल जायेंगे। " तुम मुझे ढूंढ़ोगे और पाओगे भी; क्योंकि तुम अपने सम्पूर्ण मन से मेरे पास आओगे। " (यिर्मयाह 29:13)। आइए प्रार्थना करें कि हमारे दिल हमेशा प्रभु की उपस्थिति की तलाश में लगे रहें! धन्यवाद, पिता, स्वयं को खोजने देने के लिए!

19. फल - एक फलदार वृक्ष की पहचान उस पर लगने वाले फल से होती है। मसीही व्यक्ति के रूप में हमें अच्छे फल पैदा करने की चुनौती दी गई है क्योंकि हम मसीह, सच्ची बेल (यूहन्ना 15:5) से जुड़े हुए हैं। मसीह के लिए प्रार्थना करें, जो आप में रहता है, वह आपके माध्यम से अपनी आत्मा का फल उत्पन्न करे: प्रेम, आनंद, शांति, धैर्य, दया, अच्छाई, विश्वासयोग्यता।

20. भिन्न - मिट्टी को साँचे में रखकर ईंटें बनाई जाती हैं। सूखने के बाद वे सभी एक जैसे हो जाते हैं। दुनिया हमें अपनी संस्कृति और जीवन शैली में ढालने की कोशिश करती है। बाइबल हमें दुनिया के "साँचे" को अपनाने के लिए नहीं, बल्कि ईश्वर की इच्छा के अनुसार जीने के लिए कहती है। (रोमियों 12:2) प्रभु, हमें आपके आदर्शकि अनुसार जीने के लिए विवेक और साहस प्रदान करें।

21. प्रावधान - बेरोजगारी या संसाधनों की कमी का समय परिवार के लिए कठिन समय ला सकता है। बाइबल कहती है: "जिसका मन तुझ में धीरज धरे हुए हैं, उसकी तू पूर्ण शान्ति के साथ रक्षा करता है, क्योंकि वह तुझ पर भरोसा रखता है।" (यशायाह 26:3)। परमेश्वर, हम उन लोगों के लिए शांति, दिशा और आपके प्रावधान के लिए प्रार्थना करते हैं जो काम और आजीविका की तलाश में हैं।

22. पालन-पोषण - बच्चे परमेश्वर का दिया हुआ प्रतिफल हैं, और उनके पालन-पोषण में माता-पिता की बहुत बड़ी जिम्मेदारी होती है। " जो किसी मनुष्य को डांटता है वह अन्त में चापलूसी करनेवाले से अधिक प्यारा हो जाता है। " (

नीतिवचन 28:23)। परमेश्वर, माता-पिता को अपने उद्देश्यों के अनुसार अपने बच्चों का पालन-पोषण करने के लिए साहस और दृढ़ता प्रदान करें।

23. नई वाचा – प्रिय परमेश्वर, मुझ में रहने वाले आपके जीवन की नई वाचा के लिये मैं आपका धन्यवाद करता हूं। । आपने मेरे पुराने पापी हृदय को अपनी पवित्र आत्मा से बदल दिया। आप अब मेरा मार्गदर्शन करने के लिए मेरे पास नहीं खड़े हैं; परन्तु अब, आपकी आत्मा मुझमें वास कर रही है और मुझे आपकी इच्छा जानने और उसे पूरा करने में सक्षम बना रही है। मैं आपके मार्गों पर चलना चाहता हूं। (इब्रानियों 8:8-10)

24. एक फलदायी जीवन - हे प्रभु यीशु, मैंने सोचा कि मैं अच्छा काम कर रहा हूं। अब मुझे एहसास हुआ कि सबसे अच्छा मैं जो कर सकता हूं वह शरीर के मृत कार्यों को उत्पन्न करना है, जो जीवन से रहित हैं। आप जीवन-स्रोत हैं. इसलिए, मैं आपसे विनती करता हूं कि आप मुझमें निवास करें, आप मुझ में बने रहो, और मेरे माध्यम से अपना जीवन जिएं। धन्यवाद, प्रभु, एक फलदायी जीवन के लिए! (यूहन्ना 15:4)

25. धार्मिकता का रहस्य – सर्वशक्तिमान परमेश्वर , धार्मिकता का रहस्य सभी रहस्यों में से सबसे महान रहस्यों में से एक है। यह कितना आश्चर्यजनक है कि एक पवित्र धार्मिकता हमारी मानवता में वास करेगा। यीशु ने हमारे लिए क्रूस पर मरकर रहस्य सुलझाया। मेरा दुष्ट स्वभाव आपके ईश्वरीय स्वभाव से बदल दिया गया। मुझमें रहने के लिए धन्यवाद. (कुलुस्सियों 1:26,27)

26. प्रभु में परिश्रम करना - हे प्रभु, मैंने सोचा कि मेरे अच्छे कार्य मायने रखते हैं। हालाँकि, अब मुझे एहसास हुआ कि मसीह के कार्य ही वास्तव में मायने रखते हैं क्योंकि केवल उनके कार्य ही टिकते हैं। प्रभु यीशु, मुझे अपना जीवन प्रदान करने के लिए धन्यवाद। अब मैं आपकी शक्ति में परिश्रम कर सकता हूँ। कृपया मेरे माध्यम से अपने महान और पराक्रमी कार्य पूरा करें। (कुलुस्सियों 1:29)

27. आपके कार्य का स्रोत - प्रभु यीशु, आपने समझाया कि पिता परमेश्वर, जो तुम में वास करता था, तुम्हारी गतिविधि का एकमात्र स्रोत था। जब से मैंने तुम्हें ग्रहण किया है, परमेश्वर की आत्मा मुझमें वास करती है। जैसे आप अपने पिता पर पूर्ण निर्भरता में रहते थे, मैं अपने जीवन का नियंत्रण आपको सौंपता हूं ताकि आप मेरे माध्यम से काम कर सकें। (यूहन्ना 14:10)

28. अंधापन - "और उन अविश्वासियों के लिये, जिन की बुद्धि को इस संसार के ईश्वर ने अन्धी कर दी है," (2 कुरिन्थियों 4:4)। हम सोचते थे कि यह विभिन्न होता! लेकिन वास्तविकता यह है कि केवल यीशु मसीह और उनके वचन पर विश्वास करने से ही कोई यह समझ पाता है कि परमेश्वर की इच्छा क्या है। मसीह संसार की ज्योति है। एक ऐसा व्यक्ति बनें जो सचेत रूप से परमेश्वर के प्रति समर्पित हो। अपने परमेश्वर के साथ नम्रतापूर्वक चलो।

29. सरकार - "इसलिये हर एक का हक चुकाया करो, जिनको कर देना है, उसे कर दो; जिसे महसूल चाहिए, उसे महसूल दो; जिस से डरना चाहिए, उस से डरो; जिस का आदर करना चाहिए उसका आदर करो " (रोमियों 13:7)। रोमियों 13:1-7 में बाइबल उस सरकार को संदर्भित करती है जो कानून के शासन का उपयोग भलाई के लिए करती है। सत्ता में बैठे लोगों के लिए प्रार्थना करें और एक ऐसा व्यक्ति बनें जिसका व्यवहार एक अच्छे नागरिक को दर्शाता हो।

30. देखने में असमर्थ होना - " क्योंकि यहोवा कहता है, मेरे विचार और तुम्हारे विचार एक समान नहीं है, न तुम्हारी गति और मेरी गति एक सी है।" (यशायाह 55:8)। जब आपको ऐसा महसूस हो कि जीवन में आप ठीक से देख नहीं पा रहे हैं और आप समझ नहीं पा रहे हैं कि आपके साथ चीजें क्यों हो रही हैं, तो परमेश्वर की बुद्धि और प्रेमपूर्ण प्रेरणा पर भरोसा करें। वह परमेश्वर है और उन लोगों के करीब है जो उसे बुलाते हैं और फिर भी वह आपको आश्चर्यचकित कर देगा।

31. सम्मान पदक - सर्वोच्च सैन्य सम्मान उन व्यक्तियों को दिया जाता है जो साहस, बलिदान, देशभक्ति, नागरिकता, अखंडता और प्रतिबद्धता का प्रदर्शन करते हैं। आज, जबकि अनैतिकता और अधार्मिकता की सुनामी दुनिया में फैल रही

है, परमेश्वर उन लोगों की तलाश कर रहे हैं जो देश की दीवारों को दृढ़ करें और अपने देश की रक्षा करें । (यहेजकेल. 22:30)